हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला १६६

खेटकौतुकम्

टीकाकारः-
पं० दीनानाथ झा ज्योतिषाचार्यः

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

ज्योतिष

॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला

१६६

नव्बाब खानखानाकृतं

खेटकौतुकम्

'भावबोधिनी' हिन्दीटीकासहितम्

टीकाकारः-

पं० दीनानाथ झा ज्योतिषाचार्यः

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

१९८३

प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : तृतीय, वि० सं० २०३९
मूल्य रु० C. K. D. Academy Rs. 10/-

K. 37/99, Gopal Mandir Lane
Post Box 8, Varanasi–221001 (India)

कृष्णदास अकादमी
पो० बा० ११८
चौक, (चित्रा सिनेमा बिल्डिंग), वाराणसी–२२१००१
(भारत)

भूमिका

यवन-शासन काल में ज्यौतिर्विद् नव्वाब खानखाना दैवज्ञ शिरोमणि कहे जाते थे। विशेषतया नव्वाब साहब ज्यौतिष फलादेश में अति निष्णात थे। इसका प्रमाण उनका रचित यह प्रस्तुत ग्रन्थ ही है। यद्यपि यह अत्यन्त लघु है फिर भी इस 'खेटकौतुक' नामक ग्रन्थ का भावफल और राजयोग प्रकरण समस्त जातक ग्रन्थों का सारभाग ही समझना चाहिये। इसमें उर्दू के शब्द मिश्रित होने के कारण सर्व साधारण लोग इससे पूर्ण लाभ नहीं प्राप्त करते थे अत एव इन कठिनाइयों को दूर करने के लिये हमने इसकी 'भावबोधिनी' नामक हिन्दी टीका करके उसके प्रकाशन का सर्वाधिकार-विश्वविख्यात चौखम्बा संस्कृत सीरीज के अध्यक्ष बाबू श्री जयकृष्णदासजी को दे दिया है। यदि इससे जन साधारण का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपने श्रम को सफल समझूँगा।

गङ्गादशहरा
वि० सं० २००१

विद्वज्जनानुचरः
श्री दीनानाथ झा

श्रीगणेशाय नमः

खेटकौतुकम्

'भावबोधिनी' भाषाटीकासहितम्

मङ्गलाचरणम्

यत्पदपङ्कजरेणोः प्रसादमासाद्य सर्वभुवनेषु ।
प्रणमामीष्टसुमूर्तिं तामहममराः प्रभुत्वमपि यान्ति ॥

जिन इष्टदेव के चरण कमल की धूलि की कृपा से देवता लोग समस्त भुवन के स्वामित्व को प्राप्त करते हैं, उन अपने इष्टदेव की सुन्दर मूर्ति को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

फारसीयपदमिश्रतग्रन्थाः खलु पण्डितैः कृताः पूर्वैः ।
सम्प्राप्य तत्पदपथं करवाणि खेटकौतुकं पद्यैः ॥२॥

पूर्वाचार्यों ने फारसी शब्दों से मिला हुआ संस्कृत पद्यों में विविध प्रकार के ग्रन्थों का निर्माण किया है । मैं (खानखाना नब्बाब) भी उन्हीं के चरणपथ का अवलम्बन करके उसी तरह फारसी से मिले हुए संस्कृत श्लोकों में 'खेटकौतुक' नामक ग्रन्थ की रचना करता हूँ ॥ २ ॥

अथ सूर्यफलम्

तत्र लग्नगतसूर्यफलम्—

लग्नगः सम्शखेटस्तदा लागरः
कामिनीदूषितो दुष्प्रजो वै यदा ।
पण्यरामारतो राशिमीजान्गतो
मानहीनोथ हीर्षी विदृष्टिः पुमान् ॥ ३ ॥

यदि लग्न में सूर्य हो तो वह मनुष्य दुर्बल शरीर वाला, स्त्री से अपमानित, दुर्जन सन्तानवाला तथा बाजार और बगीचे में भ्रमण करने वाला होता है। एवं यदि नीचराशि (तुला) का सूर्य लग्न में हो तो आदर से हीन, ईर्ष्यायुक्त और दुष्ट दृष्टि वाला होता है ॥ ३ ॥

अथ द्वितीयभावगतसूर्यफलम्—

यदा चश्मखाने भवेदाफताब-
स्तदा ज्ञानहीनोऽथ गुस्सर्व मुद्दाम् ।
सदा तङ्गदिलशख्तगो द्रव्यहीनः
कुवेषो गदा स्याद्वेहोशो दिवासाम् ॥ ४ ॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य ज्ञानहीन (मूर्ख), क्रोधी, विरोध करनेवाला, हमेशा तंगदिल (चिड़चिड़े स्वभाव वाला), कृपण, दरिद्र, बिरूप, रोगी और बेहोश (विस्मरण शक्ति वाला) होता है ॥ ४ ॥

अथ तृतीयभावगतसूर्यफलम्—

यदा सम्शखेटस्तृतीयस्थितो
नेककर्दानिरोगो हि शीरींसखुन ।
सदा मोदते रम्यसीमन्तिनीभिः
सवारो धनाढ्यो हि निःकोपशन् ॥ ५ ॥

यदि जन्मकाल से तृतीय भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य यशस्वी, मितव्ययी, रोगरहित हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, मधुर-भाषी, सर्वदा सुन्दरी स्त्रियों के संग विहार करने वाला, सवारी पर चलने वाला, धनवान् तथा शान्त स्वभाव वाला (क्रोधरहित) होता है ॥५॥

अथ चतुर्थभावगतसूर्यफलम्—

यदा मादरागारगः सम्शखेटः
सुखी नो हि शंसः परेशानकः स्यात् ।

सदा म्लानचित्तोथ वेश्यारतो वा
तथा जायते बेखुशी हिर्जगर्द्दः ॥ ६ ॥

यदि जन्मलग्न से चतुर्थ स्थान में सूर्य हो तो वह मनुष्य सुख से रहित सर्वदा सन्देह करनेवाला, दुःखी चित्त से युक्त, मलिन स्वभाव वाला, वेश्यागामी, शत्रु से युक्त, आनन्द से हीन और हिर्जगर्द (पागल की तरह घूमने वाला) होता है ॥ ६ ॥

अथ पञ्चमभावगतसूर्यफलम्—

अक्लखाने यदा शम्शखेटस्तदा
मानवो मानहीनः सदा जाहिलः ।
स्वल्पसङ्गप्रजश्चौर्यचिन्ताधियुग्
गुस्स्वरो धर्मकार्ये सदा काहिलः ॥ ७ ॥

यदि जन्मलग्न से पञ्चम भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य मानहीन, मूर्ख, अल्प सन्तान वाला, चोरी करनेवाला, रोगी, क्रोधी और धर्मकार्य से विमुख रहने वाला होता है ॥७ ॥

अथ षष्ठभावगतसूर्यफलम् —

यदा मर्जखाने भवेदाफताबो
जलीलो गनी खूबरोहं अवाचः ।
सदा मातृपक्षोद्धृतस्यायलब्धि-
र्निरोगोनरः शत्रुमर्द्दी तदा स्यात् ॥ ८ ॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठमाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य धनवान्, विजयी, सुन्दर, मितभाषी, मातृपक्ष (नाना के घर) से धन-लाम करने वाला, नीरोग और शत्रु को पराजित करनेवाला होता है ।८॥

अथ सप्तमभावगतसूर्यफलम्—

यदा सम्शखेटः स्मरस्थानग-
श्चिन्तया व्याकुलो ना भवेत्कामुकः ।

सदा क्षीयते कामिनीभिर्महा-
वञ्चको युद्धभूमौ चलोजम्बरः ॥ ९ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम स्थान में सूर्य हो तो वह मनुष्य चिन्ता से व्याकुल, कामी, स्त्री से विजित, ठगनेवाला और संग्राम में विजय प्राप्त करने वाला होता है ॥ ९ ॥

अथ अष्टमभावगतसूर्यफलम्—

यदा सम्शखेटो भवेन्मौतखाने
मुशार्फिविशे क्षुत्तृषापीडितो हि।
सदोद्योगहीनो महालागरः
स्वीयदेशं विहायान्यदेशाटनःस्यात् ॥१०॥

यदि जन्मलग्न से अष्टम भावमें सूर्य हो तो वह मनुष्य परदेश में भूख-प्यास से दुःख भोगने वाला, अत्यन्त दुर्बल और अपने देश को छोड़कर अन्य देश में भ्रमण करने वाला होता है ॥१०॥

अथ नवमभावगतसूर्यफलम्—

रवौ वेषखाने प्रसिद्धः सुखी
मानवश्चान्यवित्तैरलं शोभते।
विघ्नवृन्दैर्युतो मातृपक्षात्सुखं नो
धनाढ्यो यदा जायते वोच्चगः ॥ ११ ॥

यदि जन्मलग्न से नवम भावमें सूर्य हो तो वह मनुष्य जग प्रसिद्ध (विख्यात), सुखी, दूसरे के धन से आनन्द करने वाला होता है, किन्तु नाना विघ्नों से युक्त रहता है तथा मातृपक्ष (नाना के घर) से सुख नहीं होता। यदि अपनी उच्चराशि (मेष) से नवम भाव में हो तो वह मनुष्य धनवान होता है ॥११॥

अथ दशमभावगतसूर्यफलम्—

रवौ शाहखाने धनाढ्यो वफार-
स्तदा मोदते वाजिवृन्दैः सुखी च।

महीपान्तिकी नेककिर्दा सुशीलो
जमीले पितुः सौख्यमल्पं भवेद्वै ॥ १२ ॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य धनवान्, सुशील, सुखी, घोड़े पर चढ़ने वाला, राजा के समीप बैठने वाला, इमानदार, नामवर और कम खर्च करने वाला होता है। यदि सूर्य नीच राशि (तुला) का होकर दशम भाव में हो तो पिता से अल्प सुख पाता है ॥ १२ ॥

अथ एकादशभावगतसूर्यफलम्—

यदा याफ्तिखाने भवेत्सम्शखेटः
सुवेषो धनी वाहनाढ्योऽल्पशीलः।
सुयोषः शुभौकाः सिपाही सलाही
सविर्गीतगाने सुनेत्रोऽपि शिर्दार॥ १३ ॥

यदि जन्मलग्न से एकादश स्थान में सूर्य हो तो वह मनुष्य धनवान्, रूपवान्, वाहनों से युक्त, क्षुद्र स्वभाववाला, सुन्दरी स्त्री को रखने वाला, पक्का मकान वाला, सिपाही रखने वाला, मन्त्री से युक्त रहने वाला, गान विद्या में प्रेम रखने वाला, सुन्दर नेत्र-वाला और लोकनायक बनकर रहता है ॥ १३ ॥

अथ द्वादशभावगतसूर्यफलम्—

यदा खर्चखाने भवेत्सम्शखेट-
स्तदा कम्ननिर्मानहीनो नरःस्यात्।
अहल्खर्चकः सत्क्रियो वा शरार-
त्पनाहः सदा पीड्यतेऽङ्गेषु रोगैः ॥ १४ ॥

यदि जन्मलग्न से द्वादश स्थान में सूर्य हो तो वह मनुष्य नेत्र से कमजोर और मानरहित होता है तथा व्यर्थ खर्च करने वाला,

उत्तम कार्य करनेवाला, व्यर्थ विवाद करनेवाला, शत्रुओं की रक्षा करने वाला और सदा रोग से पीड़ित रहता है ॥ १४ ॥

इति तन्वादिभावगतसूर्यफलम् ॥ १ ॥

अथ चन्द्रफलम् ।

तत्र लग्नगतचन्द्रफलम्—

जवकंगार्यदाङ्गगस्तवङ्गरः सुरूपवान् ।
सुधीः सुखी नरोभवेद्विलोमगश्च तन्न हि ॥ १५ ॥

यदि जन्मलग्न में बली चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य धनवान्, रूपवान्, सुधी (पण्डित), सुखी और गुणवान् होता है। यदि चन्द्रमा शत्रु या नीच गृह में हो तो अशुभफलदायक होता है ।१५।

अथ द्वितीयभावगतचन्द्रफलम्—

कमर्यदा धनालये धनी दमी प्रियंवदः ।
वि‍‍षको नरो भवेद्बलान्वितो यकी नरः ॥ १६ ॥

यदि लग्न से द्वितीय भाव में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य धनी, शत्रु को दमन करने वाला, मीठी बोली बोलने वाला और सबको प्रसन्न करने वाला होता है। यदि चन्द्रमा बलवान् हो तो मनुष्य बलवान् और विश्वासी होता है ॥ १६ ॥

कर्मविलाधशालये नरो हि वा मुरौवतः ।
सदा बली च सौविरः सुकर्मकृद्यदा भवेत् ॥ १७ ॥

यदि जन्मलग्न से तृतीय स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य प्रभावशाली, बलवान्, सन्तोषी और उत्तम कार्य करनेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ चतुर्थभावगतचन्द्रफलम्—

कमर्यदाम्बुगेहः सखो मुकर्रवः प्रभुः ।
भवेन्नरश्च मञ्जिसीतदा बुधः सुभाग्यवान् ॥ १८ ॥

यदि जन्मलग्न से चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य दानी प्रभावशाली, पुण्य करने वाला, राजा या तत्समान, तथा मलिन चित्तवाला, विद्वान् और भाग्यशाली होता है ॥ १८ ॥

अथ पञ्चमभावगतचन्द्रफलम्—

कमर्यदेन्नगेहगः स गुलफरू भवेन्नरः।
बलान्वितो हि पादकी नदिल्पिशमंकानगः॥ १९ ॥

यदि जन्मलग्न से पञ्चम स्थान में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य विशेष तेजयुक्त शरीर वाला, वलवान्, सवारी पर चलने वाला, सावधान चित्तवाला, सुशील और लज्जावान् होता है ॥ १९ ॥

अथ षष्ठभावगतचन्द्रफलम्—

काललो विपक्षपक्षपीडितो हि बद्शकल्।
लाग़रः कमर्भवेद्रिपौ यदा नरः सरुक्॥ २० ॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठ स्थान में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य सर्वदा शत्रु और रोग से पीड़ित, कुरूप, दुर्बल शरीर वाला और रोग युक्त होता है ॥ २० ॥

अथ सप्तमभावगतचन्द्रफलम्—

जन्मकामगः कमर्यदा भवेन्नरो भृशम्।
गुल्फरू यशी गनी यशः करोत्यहर्निशम्॥ २१ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य अति रूपवान्, नीरोग, यशस्वी और धनवान् होता है।

अथ अष्ठमभावगतचन्द्रफलम्—

उमर्गृहे कमर्यदा नरो भवेत्सदाऽऽमयी।
बहिर्जगुर्द गुस्सवर्वं देशमुक् च निर्दयी॥ २२ ॥

यदिजन्मलग्न से अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य रोगी, व्यर्थ (निष्प्रयोजन) घूमने वाला, क्रोधी, निर्दयी, तथा अपने देश

को त्याग करने वाला होता है ॥ २२ ॥

अथ नवमभावगतचन्द्रफलम्—

नशीबखानगः कमर्मुईशसंज्ञकं नरम् ।
मुतम्मविल्च आमिलं सिकम्युकं करोति वै ॥२३॥

यदि जन्मलग्न से नवम स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य देवता के समान तेजस्वी, धनवान्, ईश्वरभक्ति में रत और सवारियों पर चढ़ने वाला होता है ॥ २३ ॥

अथ दशमभावगतचन्द्रफलम्—

कमर्यदा गृहाश्रितो हि हम्जत्रारकं नरम् ।
तवङ्गरं च कामिलं करोति वै च साविरम् ॥२४॥

यदि जन्मलग्न से दशम स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य पिता का आज्ञाकारी, परिवार का भरण-पोषण करने वाला, लक्ष्मीवान्, बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, सुशील और सन्तोषी होता है ॥ २४ ॥

अथ एकादशभावगतचन्द्रफलम्—

धनाधिपश्च खूबरू सखो सुबुद्धिपुङ्गरः ।
शिरोसखुन् विदूषको भवेद्यदा कमर्भवे ॥२५॥

यदि जन्मलग्न से एकादश स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य धनाढ्य, मनोहर कान्तिमान्, दानी, बुद्धिमान्, मधुरभाषी और निर्दुष्ट कार्य करने वाला होता है ॥ २५ ॥

अथ द्वादशभावगतचन्द्रफलम्—

व्ययालये कमर्यदा भवेत्किरीह चश्मखन् ।
विरोधनश्च खिश्मनाप्यकीर्तिमान् हि उष्ट्रघः ॥२६॥

जिसके जन्मकाल से द्वादश स्थान में चन्द्रमा हो वह मनुष्य नेत्ररोग से युक्त रहने वाला, व्यर्थ विरोध करने वाला, अपव्ययी,

बुरे स्वभाव वाला, कुकर्म करनेवाला तथा निन्दित सवारी पर चढ़ने वाला होता है ॥ २६ ॥

इति तन्वादिभावगतचन्द्रफलम् ॥ २ ॥

अथ मङ्गलफलम्

तत्र लग्नगतमङ्गलफलम्—

यदि भवति मिरोखो लग्नगः खिश्मनाक्स्या-
द्रुधिरप्रभवरोगैः पीडितो मुफ्लिसश्च ।
सकलजनविरोधी हासिलो लागरो ना
जनुषि खलु वियोगो दारपुत्रैर्हमेशः ॥२७॥

यदि लग्न में मङ्गल हो तो मनुष्य जनसमुदायों से झगड़ा करने वाला, रक्तविकार से होने वाले रोगों से पीड़ित रहने वाला, व्यर्थ में समय को बिताने वाला, सबका विरोध करने वाला, दुर्बल शरीर वाला और सर्वदा स्त्री-पुत्र से पृथक् रहने वाला होता है ॥ २७ ॥

अथ द्वितीयभावगतमङ्गलफलम्—

यदि भवति मिरीखश्चश्मखाने बहोशः
सुतधनसुखदारैर्वर्जितः शूरगः स्यात् ।
नसनयमुतफक्किर्हीनशक्तिर्वदर्दः
खलजनसमबुद्धिर्मानवः कर्जदारः ॥ २८ ॥

यदि जन्म लग्न से द्वितीय स्थान में मङ्गल हो तो मनुष्य बेढङ्गा (वेवकूफ) स्त्री, पुत्र तथा सुख-सम्पत्ति से हीन, संग्राम-प्रिय, सदा चिन्ता से युक्त, कुरूपवान्, दुर्बल, निर्दयी, दुर्बुद्धि और ऋण लेने में बहादुर होता है ॥ २८ ॥

अथ तृतीयभावगतमङ्गलम्—

जरशुतुरजवाहिर्रत्नतम्बूकनातैः
सहजविमतिरोगैः संयुतोऽसंयुतश्च ।
यदि भवति मिरोखाः खूबरो वा मुखैइल्-
वजरफिवरसंज्ञः स्याद्विरादर्गृहे ना ॥२९॥

यदि जन्मलग्न से तृतीय स्थान में मङ्गल हो तो मनुष्य धनी होता है। ऊँट, जवाहरात, रत्न, तम्बू, कनात आदि रखने वाला होता है तथा सर्व प्रकार के रोग से मुक्त रहता है एवं प्रभावशाली, रूपवान् और धनवृद्धि करने वाला होता है ॥ २९ ॥

अथ चतुर्थभावगतमङ्गलफलम्—

पदकरजविराड्वै नो तनूत्थं सुखं च
समरधरधरायां धैर्ययुन्धी धनीनः ।
खरयुशनक बेदर्द कर्जमन्दो हमेशः
प्रभवति च मिरीखो दोस्तखाने नरश्चेत् ॥३०॥

यदि जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में मङ्गल हो तो मनुष्य लम्बे-लम्बे हाथ-पैर वाला, शारीरिक सुख से रहित, संग्रामभूमि में धैर्य धारण करने वाला, सम्पत्तिहीन, बलिष्ठ, कठोर हृदय वाला और सर्वदा कर्ज लेने वाला होता है ॥ ३० ॥

अथ पञ्चमभावगतमङ्गलफलम्

कमफहमतदाना अक्लखाने मिरीखः
पिशरजरवजीर न्नेस्तदरखानये स्यात् ।
अनिलकफजरोगैर्व्याकुलो बेमुरौवत्
गुसवर बद-अक्लश्चोदरव्याधियुक्स्यात् ॥३१॥

यदि जन्मलग्न से पञ्चम स्थान में मङ्गल हो तो मनुष्य अल्प बोलने वाला, बुद्धिहीन, धन, पुत्र तथा उत्तम जीविका के सुख से रहित, कफ-वायु जनित रोग से व्यथित, दुःखशील, क्रोधी और पेट के रोग से पीड़ित होता है ॥ ३१ ॥

अथ षष्ठभावगतमङ्गलफलम्—

रिपुजनपरिहन्ता खूबरो हम्जवान् स्या-
ज्जशनजरजलालैर्युङ्नहेवानजातः ।
यदि भवति मिरीखो मर्जखाने कदर्दान्
कृतकुलजननौखो मातृपक्षे कुठारः ॥ ३२ ॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठ भाव में मङ्गल हो तो वह मनुष्य शत्रु को पराजित करने वाला, सुन्दर स्वरूप वाला, कोई ऐब (दोष) से युक्त, धनादि सुख से पूर्ण, सभी का सत्कार करने वाला तथा अपने कुल में सर्वमान्य होता है किन्तु नाना के कुल में कुठार सदृश (नाश करने वाला) होता है ॥ ३२ ॥

अथ सप्तमभावगतमङ्गलफलम्—

कमशहबत किरयांवश्चबेरो नहि स्या-
ज्जिहिल जुलुमजङ्गैर्युङ्न चाल्पः खमाणे ।
तनुधनगमवेश्मस्त्री-सुखैर्वर्जिताऽज्ञो
भवति यदि जलादुल्कल्कको जन्मकाले ॥ ३३ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम भाव में मङ्गल हो तो मनुष्य अल्प स्त्री सम्भोग करने वाला, कष्ट से जीवन बिताने वाला, अन्याय से युद्ध करने वाला तथा शरीर, धन, गृह और स्त्री सुख से वर्जित होता है ॥ ३३ ॥

अथ अष्टमभावगतमङ्गलफलम्—

यदि भवति जलादुल्कल्कको मौतखाने
सततमहितभाषी गुह्यरुक्स्त्रीसुखोनः ।
मुतफकिरबदामे जौहरो सोथ जख्मी
कमफहममनः स्याल्लागरोऽसृग्विकारैः ॥ ३४ ॥

यदि जन्मलग्न से अष्टम भाव में मङ्गल हो तो मनुष्य सदा

अप्रिय बोलने वाला, गुप्त रोग से युक्त, स्त्रीसुख से विहीन, चिन्तित रहने वाला, जौहरी (हीरा मोती आदि को पहचानने वाला) जख्म (शस्त्र घात) तथा शोथ (सूजन) रोग से कष्ट पाने वाला, बुद्धिविहीन, दुर्बल शरीर वाला और रक्त दोष से दुःख भोगने वाला होता है ॥ ३४ ॥

अथ नवमभावगतमङ्गलफलम्—

नरपतिकुलमान्यः ऽलभो बन्दनादो
भवति यदि जलादुल्कलकको बख्तखाने ।
परयुवतिरतः स्यान्मानदो भाग्यवान्वै
पुरजसुखसुसिद्धो हिर्जंगर्दश्च लेखः ॥ ३५ ॥

यदि जन्मलग्न से नवम स्थान में मङ्गल हो तो मनुष्य राजाओं के यहाँ यश पाने वाला, सर्वमान्य, परस्त्री से प्रेम करने वाला, भाग्यवान्, ग्राम्यसुख को भोगने वाला तथा व्यर्थ घूम-घूम कर समय बिताने वाला होता है ॥ ३५ ॥

अथ दशमभावगतमङ्गलफलम्—

पुरफितरितसंज्ञः काबिलो नेककिर्दा-
र्नयसमरिह लोके पूजितः साहसी च
मिहिरजरजलालज्जारजेवर्युतो ना
भवति यदि मिरोखोशाहखाने सखी स्यात् ॥ ३६ ॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में मङ्गल हो तो, मनुष्य धनवान्, बुद्धिवान्, इमानदार, कंजूस, नीतिज्ञ, बन्धुजनों से पूजित, साहसी, जाल करने वाला, लज्जावान्, भूषणप्रिय और धन आदि से युक्त होकर दानी होता है ॥ ३६ ॥

अथ एकादशभावगतमङ्गलफलम्—

जरमखमलमर्ज्याजर्कशीसाहिबीभि-
स्तुरगरथपदात्यैर्युग्जनश्चारिहीनः ।

यदि भवति जलादुल्कल्कको यापितखाने
मदनसमरदक्षः पण्डितः सत्यगन्ता ॥३७॥

जिसके जन्मलग्न से एकादश स्थान में मंगल हो वह मनुष्य जरी, रेश्मी, मखमली आदि कीमती वस्त्रों से युक्त, प्रतापशाली, घोड़ा, हाथी, सवारी गाड़ी, नौकर-चाकर आदि रखनेवाला, दुश्मनों से रहित, कामक्रीड़ा में समर्थ तथा बुद्धिमान और सत्यवादी होता है ॥

अथ द्वादशभावगतमङ्गलफलम्—

यदि भवति मिरीखः खर्चखाने गतश्च
स्वजनहृदयभेत्ता कर्कशैर्वा वचोभिः ।
महमहवजजुल्मी साहिदोबेजनः प्राग्
जठरदहनदर्पो नुर्हमेशः परेशान् ॥३८॥

यदि जन्मकाल में द्वादश भाव में मंगल हो तो, मनुष्य अपने बन्धुवर्गों को कटुवचन कहकर कष्ट देनेवाला, विशेष उत्पात मचानेवाला, क्रोधी और सर्वदा व्यर्थ परेशान रहने वाला होता है ॥३८

इति तन्वादिभावगतमङ्गलफलम् ।

अथ बुधफलम्

तत्र लग्नगतबुधफलम्—

साहब् सवारो जितखूबरोमा
तुतारहः साहबहिम्मतश्च ।
ताले भवेच्चेत्सततं विनीतो
दानीचिरं चात्मजसौख्ययुक् स्यात् ॥३९॥

जिसके जन्मलग्न में बुध हो वह मनुष्य न्यायकर्ता, सवारी पर चलने वाला, सुन्दर रूपवाला, दयावान्, उत्साही, विनयी, दाता और बहुत काल तक पुत्र-पौत्रादि के सुख से सुखी रहता है ॥३९॥

अथ द्वितीयभावगतबुधफलम्—

शीरींसखुन् दानिशवर्गनीच-तवङ्गरः स्याद्यदि चश्मखाने ।
उतारदो ना स्वजनानुरक्तो भवेद्विनीतः शुभकृत्यमेति ॥४०॥

यदि जन्म लग्न से द्वितीय भाव में बुध हो तो मनुष्य मधुर वचन बोलने वाला, दानी होते हुए भी दानियों में नीच अर्थात् कम दान करने वाला, कुटुम्बियों से प्रीति रखने वाला, विनीत और शुभकार्य करने वाला होता है ॥ ४० ॥

अथ तृतीयभावगतबुधफलम्—

मुरौवती साहबदर्दसंज्ञः प्रभूतिमित्रप्रमदाप्रियश्च ।
उतारदश्चेन्नशरोयशीयुंखोनो भवेन्नाखुशरो हमेशः ॥४१

यदि जन्म लग्न से तृतीय भाव में बुध हो तो मनुष्य सुशील, प्रभावशाली, दयालु, सम्पत्ति से युक्त, मित्र-प्रिय, स्त्री से अधिक प्रेम करनेवाला, यशस्वी और हमेशा खुश-दिल रहता है ॥४१॥

अथ चतुर्थभावगतबुधफलम्—

पुष्टोऽनपत्योथ स वै यथेच्छो दानीश्वरो गीतप्रियः खसी च ।
उतारदः स्याद्यदि दोस्तखाने शीरींसखुन्कार्यगते मृषी च ॥

यदि जन्म लग्न से चतुर्थ भाव में बुध हो मनुष्य हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ शरीर वाला होते हुए भी सन्तान से हीन होता है और स्वतन्त्र, दानी, नाच-गान का प्रेमी, उदार, मधुर भाषी, आलसी और झूठ बोलने वाला होता है ॥ ४२ ॥

अथ पञ्चमभावगतबुधफलम्—

सुतान्वितः सुरंफितद्भवेन्ना युतारदः स्याद्यदि अक्लखाने ।
दानाग्रणीः साविरसंज्ञकश्च शिगू फुरूसाहबहिम्मतश्च ॥४३

यदि जन्म लग्न से पंचम स्थान में बुध हो तो, मनुष्य पुत्रवान्, शौकीन, धनवान्, चतुर, बुद्धिमान्, महादानी, सन्तोषी, सुन्दर स्वरूप वाला और पूर्ण साहसी होता है ॥ ४३ ॥

अथ षष्ठभावगतबुधफलम्—

बेरो नरः स्यान्नसिआ विधानो
बद्खुल्कः काहिलजाहिलोपि ।
बंदूमकाने हि भवेदबीरु—
ल्कल्को यदा मांधविपक्षयुक्चेत् ॥ ४४ ॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठ स्थान में बुध हो तो, मनुष्य सदा दुःख भोगने वाला, बुद्धिहीन (मूर्ख), दीर्घसूत्री (आलसी), व्यर्थ कार्य करने वाला, शत्रुकृत उपद्रव से युक्त और मददगार से हीन होता है ॥ ४४ ॥

अथ सप्तमभावगतबुधफलम्—

तालेवरः सत्यवचा मुसाहिब् परोपकारी जनखूबरो च ।
उतारदः स्याद्यदि सप्तमे च भवेन्नरः काबिल वा मुरौवतः ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम भाव में हो तो, मनुष्य पूर्ण धनवान्, सत्यवादी, राजमन्त्री, परोपकारी, बुद्धिमान्, सुन्दर स्वरूपवान्, सुशील और प्रभावशाली होता है ॥ ४५ ॥

अथ अष्टमभावगतबुधफलम्—

उमर्दराजः सुतरां सगर्वमेकंपुरं पार्थिवलब्धवित्तम्
बेरो विधानं हि नरं प्रकुर्यादुतारदो मार्गमकानगश्चेत् ॥ ४६ ॥

यदि जन्मकाल में बुध अष्टम भाव में हो तो, मनुष्य दीर्घायु, अभिमानी, नगर का स्वामी, राजा से धन प्राप्त करनेवाला और बान्धवों से विरोध करनेवाला तथा पैदल चलने में आलसी होता है ॥

अथ नवमभावगतबुधफलम्—

दानीश्वरः सत्यगुणैरुपेतः खुश्रो गनी धर्मपरस्तवङ्गरः ।
यदा दबीरुल्कुलको नशीबखाने भवेत्स प्रथितः शुभङ्करः ॥ ४७

यदि जन्मलग्न से नवम भाव में बुध हो तो, मनुष्य दाता,

धनी, सत्यवादी, गुणी, सुखी, लोक-विख्यात, धर्मपरायण और शुभकार्य करने वाला होता है ॥ ४७ ॥

अथ दशमभावगतबुधफलम्—

साहब् जलालो मुतमौवलः स्यान्नरेन्द्रमुख्यः शुभकर्मकृन्ना ॥
शीरींसखुन्साहबदर्दसंज्ञश्चोत्तारश्दचेत्खलु शाहखाने ॥४८॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में बुध हो तो, मनुष्य प्रभावशाली, धनवान्, राजाओं में श्रेष्ठ, शुभ कार्य करनेवाला, सुन्दर स्वरूप वाला, न्यायकर्ता, दयालु और मधुर वचन बोलने वाला होता है ॥ ४८ ॥

अथ एकादशभावगतबुधफलम्—

तवङ्गरश्चात्मजसौख्ययुक्स्याद्दानाग्रणीभूपप्रियस्सिपाही ।
सर्दारकः पाकदिलो दवीरुल्कल्कोयदा याप्तिमकानगा स्यात्॥

यदि जन्म लग्न से एकादश भाव में बुध हो तो, मनुष्य धनवान् सुन्दर स्वभाव वाला, तेजस्वी, पुत्र के सुख से युक्त, दाताओं में श्रेष्ठ, राजा का प्रिय मुलाजिम या मुलाजिमों का सरदार, सच्चे दिलवाला और विनीत होता है ॥ ४९ ॥

अथ द्वादशभावगतबुधफलम्—

नापाक्जनैश्चारुगुणैरुपेतो वेतालकः कम्शदबर्बददः ।
उतारदः स्याद्यदि खर्चखाने भवेद्धिरीसोपि च गर्दवर्दः ॥५०॥

यदि जन्मलग्न से द्वादश भाव में बुध हो तो, मनुष्य नीच जाति के संसर्ग में रह कर नीच गुणों से युक्त होता है और अपने इच्छानुसार काम करने वाला, किसी का भी कुछ नहीं सुननेवाला, दुःखी रहने वाला तथा व्यर्थ घूमने वाला होता है ॥ ५० ॥

इति तन्वादिभावगतबुधफलम्

अथ गुरुफलम् ।

तत्र लग्नगतगुरुफलम्—

मुश्तरी यदि भवेत्खलु ताले साहबः खुशदिलो मनुजः स्यात्
आमिलः पुरुसखुन् सिरदारः फारसो ह्यकविरो महवूवः ॥

यदि जन्मलग्न में गुरु (बृहस्पति) हो तो, मनुष्य न्याय करने वाला, प्रसन्न चित्त से रहने वाला, ईश्वर का भक्त, सुखी, सुन्दर स्वरूप वाला, नायक (सरपंच), साफ सुथरा रहने वाला, कविता करने वाला और तेजस्वी होता है ॥ ५१ ॥

अथ द्वितीयभावगतगुरुफलम्—

मुश्तरी यदि भवेज्जरखाने बुजरुगः परमपुण्य-मतिस्स्यात् ।
कामिलः कनकसूनुयुतश्च खूबरो हि मनुजो जरदारः ॥५२॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय स्थान में बृहस्पति हो तो मनुष्य बड़ा बुद्धिमान्, पुण्यकर्म करने में चित्त रखने वाला, सिद्धि को जानने वाला, सुवर्ण आदि धन से युक्त, सुन्दर शरीर वाला और सुखी होता है ॥ ५२ ॥

अथ तृतीयभावगतगुरुफलम्—

गाफिलोबहुपराक्रमयुक् स्यान्मानवः परुषवाक्च बखीलः ।
पालको भवति श्रेष्ठजनानां मुश्तरी यदि बिरादरखाने ॥५३॥

यदि जन्मलग्न से तृतीय भाव में बृहस्पति हो तो, मनुष्य गाफिल (उदासीनता से कार्य करने वाला), उत्साही, कटुवचन बोलने वाला, व्यर्थ बोलने वाला कंजूस और भले आदमी का पालन करने वाला होता है ॥ ५३ ॥

अथ चतुर्थभावगतगुरुफलम्—

अश्वजर्जरकशीरथफीलैर्युग्जनः प्रियतमः खलु राज्ञः ।
मुश्तरी यदि भवेद्धि चहारुम्खानये सकलसौख्ययुतः स्यात् ॥

यदि जन्मलग्न से चतुर्थ स्थान में बृहस्पति हो तो, मनुष्य घोड़ा–हाथी–रथ, जरीदार वस्त्र आदि से युक्त धनी होता है और मधुर बोलने वाला तथा सभी सुख से युक्त होता है ।।५४।।

अथ पञ्चमभावगतगुरुफलम्—

पण्डितः पुरुतरद्दुद आर्यः पुत्रपौत्रसहितो महबूबः ।
मुश्तरी यदि भवेत्फरजन्दस्यालये न मनुजो जरदारः ।।५५।।

यदि जन्मलग्न से पञ्चम स्थान में बृहस्पति हो तो, मनुष्य पण्डित होता है तथा चिन्तायुक्त रहने वाला, पुत्र पौत्र से युक्त, तेजस्वी, प्रतिष्ठित और धनी होता है ।। ५५ ।।

अथ षष्ठभावगतगुरुफलम्—

काहिलश्च बहुरोगयुतश्च मानवो वदसखुन्बदशिल्कः ।
मुश्तरी यदि भवेद्रिपुखाने मातुलादिभवसौख्यविहीनः ।।५६।।

यदि जन्मलग्न से षष्ठ स्थान में बृहस्पति हो तो मनुष्य बड़ा आलसी, अनेक रोगों से युक्त, कटु वचन बोलने वाला, अपवाद (कलङ्क) से युक्त और मातामह पक्ष (मातृकुल) के सुख से विहीन होता है ।। ५६ ।।

अथ सप्तमभावगतगुरुफलम्—

फाजिलः सुखयुतः सुविनीतो
हम्जवाक् च रमणीसुखयुक्तः ।
फारसश्च चतुरः किल ना स्यान्-
मुश्तरी यदि भवेज्जनखाने ।।५७।।

यदि जन्मलग्न से सप्तम स्थान में बृहस्पति हो तो मनुष्य अनेक शास्त्र जानने वाला, सभी सुख से युक्त, बुद्धिमान्, विनीत स्वभाव वाला, सुन्दर बोलने वाला, स्त्री सम्बन्धी सुख से युक्त, शत्रु को जीतने वाला और नीरोग होता है ।। ५७ ।।

अथ अष्टमभावगतगुरुफलम्—

बेदिलश्च परदेशरतश्च जाहिलः खलु नरः सगदश्च ।
मुश्तरी यदि हि हस्तमखाने गुरुवरः किल भवेज्जनमस्तः ॥

यदि जन्मलग्न से अष्टम स्थान में बृहस्पति हो तो मनुष्य निर्दयी, विदेश में रहने वाला, बुद्धिहीन, रोगी, क्रोधी और व्यर्थ विवाद करने वाला होता है ॥ ५८ ॥

अथ नवमभावगतगुरुफलम्—

हज्रते च खुशपरिजनवांश्च खूबरो बहुसुखी च मुशीरः ।
आमिलश्च यदि यक्तमखामे मुश्तरी प्रविभवेत्खलु यस्य॥५९॥

यदि जन्मलग्न से नवम भाव में बृहस्पति हो तो, मनुष्य कुलीन, भाग्यवान्, सुन्दर स्वरूप वाला, सुखी, यशस्वी, ईश्वर-भक्त और परिवारों से युक्त होता है ॥ ५९ ॥

अथ दशमभावगतमगुरुफलम्—

पालकीजलजवाहिरफीलः संयुतो विविधवस्त्रविशालैः ।
मुश्तरी भवति शाहमकाने साहबः खलु नरो नसरः स्यात् ॥

यदि जन्मलग्न से दशम स्थान में बृहस्पति हो तो, मनुष्य पालकी, नाव, जहाज, जवाहरात (रत्न), तथा हाथी आदि से युक्त, अनेक तरह के वस्त्र तथा जेवरात का रखने वाला, न्याय-कारी और बहुत आदमियों का सरदार होता है ॥ ६० ॥

अथ एकादशभावगतगुरुफलम्—

साबिरः शुभतनुर्जरदारः फारशो बहुपराक्रमयुक् स्यात् ।
काबिलश्च यदि याफ्तिमकानेमुश्तरी प्रविभवेत्खुशरो स्यात्॥

यदि जन्मलग्न से एकादश स्थान में बृहस्पति हो तो, मनुष्य सन्तोष रखने वाला, सुन्दर स्वरूप वाला विद्वान्, धनवान्, बल-वान्, चतुर, खुश रहने वाला और उत्साही होता है ॥ ६१ ॥

अथ द्वादसभावगतगुरुफलम्—

मुफ्लिसः कमफहम् गतलज्जो बदसखुंश्च रणभूतलचिन्तः।
काहिलश्च यदि खर्चमकाने मुश्तरी भवति ना बदफैलः ॥६२॥

यदि जन्मलग्न से द्वादश भाव में बृहस्पति हो तो, मनुष्य व्यर्थ दिन काटने वाला, थोड़ा बोलने वाला, निर्लज्ज, कटुवचन बोलने वाला, युद्ध की चिन्ता करने वाला, आलसी और कुकर्म में धन खर्च करने वाला होता है ॥ ६२ ॥

इति तन्वादिभावगतगुरुफलम् ॥ १ ॥

अथ शुक्रफलम्

अत्र लग्नगतशुक्रफलम्—

अव्वलखाने जोहरा महबूबं मुकरवं नृपतिम्।
दानिश्मन्दं मनुजं जरदारं जनखूबरो प्रकुरुते ॥ ६३ ॥

यदि जन्मलग्न में शुक्र हो तो, मनुष्य तेजस्वी, प्रतापशाली, धनवान्, राजा, दानी, सञ्चयशील, शौकीन और सुन्दर स्वरूप वाला होता है ॥ ६३ ॥

अथ द्वितीयभावगतशुक्रफलम्—

शीरींसुखुन् मनुष्यं जरजेवर्जर्कशीशालैः।
यक्मिहरो जरखाने जोहरा कुरुते च सद्धूजं दक्षम् ॥६४॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय भाव में शुक्र हो तो मनुष्य मधुर वचन बोलने वाला, सदा प्रसन्न चित्त रहने वाला, रत्न तथा जरीदार वस्त्र आदि उत्तम-उत्तम वस्त्रों से युक्त और सत्कार्यपरायण होता है ॥ ६४ ॥

अथ तृतीयभावगतशुक्रफलम्—

जोहरा भवति बिरादर-खाने चेन्मानवो जातः।
जोरावरो हरीशः सालस्यः सानुजस्साश्वः ॥ ६५ ॥

यदि जन्मलग्न से तृतीय भाव में शुक्र हो तो मनुष्य आलसी होता है तथा छोटे भाइयों से युक्त अत्यन्त बलशाली और घोड़ा रखने वाला होता है ॥ ६५ ॥

अथ चतुर्थभावगतशुक्रफलम्—

ऐयाशो मालदारो नेकीकारश्च फारसश्चेत्स्यात् ।
जोहरा दोस्तमकाने भवति मनुष्यः प्रियंवदश्चाढ्यः ॥ ६६ ॥

जिसके जन्मकाल में शुक्र चतुर्थ स्थान में हो वह मनुष्य व्यभिचारी, धनवान्, परोपकारी और सत्यकार्य करनेवाला, बुद्धिमान्, चतुर, शास्त्र जाननेवाला और मीठा वचन बोलनेवाला होता है ॥ ६६ ॥

अथ पञ्चमभावगतशुक्रफलम्—

दानीश्वरो मनुष्यः सुतधनधान्यैश्च संकुलो यस्य ।
जोहरा पञ्चमखाने भवति यदा हि महीपतेः प्रीतिः ॥ ६७ ॥

यदि जन्मलग्न से पञ्चम स्थान में शुक्र हो तो मनुष्य दाताओं में श्रेष्ठ, पुत्र-धन-सम्पत्तिसे युक्त और राजाका प्रिय होता है॥६७।

अथ षष्ठभावगतशुक्रफलम्—

यारोनः कम्सहवद् बेदर्दो जाहिलो जातः ।
खलु जोहरा हि दुश्मन् खाने वै बेदिलो भवति ॥ ६८ ॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठ स्थान में शुक्र हो तो, वह मनुष्य मित्र से विरोध करने वाला, निर्दयी, बेवकूफ, अपनी इच्छानुसार व्यवहार करने वाला, मूर्ख और चुगलखोर होता है ॥ ६८ ॥

अथ सप्तमभावगतशुक्रफलम्—

साहबदर्दः कुशलः सकलकलासु फारसो ना स्यात् ।
जोहरा हफ्तमखाने स्त्रीजनचिन्तासुरञ्जको भवति ॥ ६९ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम भवन में शुक्र हो तो मनुष्य न्यायकारी, दयालु, चतुर और सर्व कार्य में कुशल होता है। तथा

स्त्री चिन्ता से युक्त और क्रोधी होता है ॥ ६९ ॥

अथ अष्ठमभावगतशुक्रफलम्—

मगरूरो बदखुल्कः स्त्रीधनसौख्यैश्च वर्जितो मनुजः ।
हत्तुमखाने जोहरा भवति वितृप्तं मनो न संग्रामे ॥ ७०

यदि लग्न से अष्टम भाव में शुक्र हो तो मनुष्य अभिमानी कटु वचन बोलनेवाला, स्त्री और सुख से विहीन होता है तथा लड़ाई में अभिरुचि रखनेवाला होता है ॥ ७० ॥

अथ नवमभावगतशुक्रफलम्—

नेकीकारः सुभगः खुशरो दानी च मानवो जोहरा ।
बख्तमकाने मुर्ताज् नशरश्च मज्लिसी भवति स इति ॥ ७१ ।

यदि जलमग्न से नवम भाव में शुक्र हो तो मनुष्य उत्तम कार्य करनेवाला, सुन्दर शरीरवाला, आनन्द से रहने वाला, दानी, धर्म मानी, सभा-सोसाइटीमें भाग लेनेवाला और स्वाधीन होता है।७१

अथ दशमभावगतशुक्रफलम्—

दर्राको जरदारः पितुगुरुभक्तश्च काबिलो मनुजः ।
जोह्रा शाहमकाने भवति मुशीरश्च साहबो वा स्यात् ॥७२।

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में शुक्र हो तो वह मनुष्य दुष्ट स्वभाववाला,धनवान,माता,पिता और गुरुजनों की सेवा करनेवाला बुद्धिमान, रत्न आदि धातुओंकी पहचान करनेवाला होता है ॥७२॥

अथ एकादशभावगतशुक्रफलम्—

जरदारं महबूबं सिर्दारं वा मुरौवतं मनुजम् ।
याफ्तिमकाने जोहरा मईशं पुरुदतं कुरुते ॥ ७३ ॥

यदि जन्मलग्न से एकादश भाव में शुक्र हो तो मनुष्य धनवान्, तेजस्वी, अधिकारी, सुशील और राजा के समान यशस्वी होता है ॥ ७३ ॥

अथ द्वादशभावगतशुक्रफलम्—

साहबखर्चो बदकार् कमसहश्च मानवो ह्युदितः ।
बदअक्लः किल जोहरा खर्चमकाने हि गुस्वरो भवति ॥७४॥

यदि जन्मलग्न से द्वादश भाव में शुक्र हो तो वह मनुष्य शौकीन, अधिक खर्च करनेवाला, नीच कर्म करने वाला, स्वेच्छा से व्यवहार करनेवाला, बुद्धिहीन और बहुत क्रोधी होता है ॥७४॥

इति खेटकौतुके तन्वादिभावगतशुक्रफलम् ।

अथ शनिफलम्

तत्र लग्नगतशनिफलम्—

ताले यदि स्याज्जुहलो बदअक्लश्च लागरो मनुजः ।
शठकम्बुरु बेदिलः वाममतिपूर्णः प्रभुर्भवति ॥ ७५ ॥

यदि जन्मलग्न में शनि हो तो वह मनुष्य बुद्धिहीन, शरीर से दुर्बल, दुष्ट स्वभाववाला, कुरूप, निर्दयी, टेढ़ी बुद्धिवाला और अधिकारपूर्ण होता है ॥ ७५ ॥

अथ द्वितीयभावगतशनिफलम्—

यावागो बद्हालः कोतोदत्तश्च गुस्वरो जोह्लः ।
जर्खाने यदि मनुजो नाढ्यः परदेशगश्चापि ॥ ७६ ॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय स्थान में शनि हो तो वह मनुष्य जीवन भर दुःखी रहनेवाला, तंगदिल से वितानेवाला, क्रोधी, व्यर्थ दिन वितानेवाला, धनहीन और परदेशगामी होता है ॥७६॥

अथ तृतीयभावगतशनिफलम्—

जोराबरो यशशीलः खुशदाना च मानवः सभ्यः ।
अनुचरवृन्दसमेतो भवति यदा वै विरादरे जोह्लः ॥ ७७ ।

यदि जन्मलग्न से तृतीय भाव में शनि हो तो वह मनुष्य

पूर्ण बलशाली, यशस्वी, सर्वदा प्रसन्न चित्त रहनेवाला, सभा में चतुर और बहुत से नौकरों से युक्त होता है ॥ ७७ ॥

अथ चतुर्थभावगतशनिफलम्—

मुतफक्किरो बहोशः परितप्तो मानसो जोह्लः ।
मादरखाने यदि स्यात् कमजोरश्च लागरो भवति ॥ ७८ ॥

यदि जन्मलग्न से चतुर्थभाव में शनि हो तो वह मनुष्य सदैव चिन्तायुक्त, व्यवहार से उदासीन, मानसिक व्यथा से व्याकुल और सब तरह से कमजोर होता है ॥ ७८ ॥

अथ पञ्चमभावगतशनिफलम्—

बदअक्लो मुत्फकिरः सुतसुखरहितश्च काहिलो मनुजः ।
जोह्लः पञ्जुमखाने कोतहदेहश्च जाहिलो भवति ॥७९॥

यदि जन्मलग्न से पञ्चम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य दुष्ट बुद्धिवाला, चिन्तित रहनेवाला, पुत्र सुख से विहीन, आलसी, नाटे शरीर वाला और विवेक से शून्य होता है ॥ ७९ ॥

अथ षष्ठभावगतशनिफलम्—

दानीश्वरं जलीलं जनयति मनुजं मुकर्रमं नृपतिम् ।
निर्जितवैरिसमूहं दुश्मन्खाने स्थितो जोह्लः ॥ ८० ॥

यदि षष्ठभाव में शनि हो तो मनुष्य दाताओं में श्रेष्ठ, चिन्ता से दुःखी, प्रभावशाली, राजा या राजा के समान होता है तथा शत्रुओं के दलों को जीतनेवाला होता है ॥ ८० ॥

अथ सप्तमभावगतशनिफलम्—

बदरो जनः कृशाङ्गः कम्फहमश्च मानवो हिर्जः ।
जानो वा स्याज्जोहलो हफ्तुमखाने यदा भवति ॥ ८१ ॥

यदि जन्म लग्न से सप्तम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य दुराचारी, दुर्बल शरीरवाला, अल्प बोलनेवाला, बुद्धिहीन और पराधीन रहने वाला होता है ॥ ८१ ॥

अथ अष्टमभावगतशनिफलम्—

बीमारश्च हरीशो दगालबाजश्च दोजखी मनुजः ।
जोह्लहस्तुमखाने भवति बखीलः कृपालसो भीरुः ॥ ८२ ॥

यदि जन्मलग्न से अष्टम भाव में शनि हो तो मनुष्य सदैव रोगयुक्त,आलसी, कपटी तथा सर्वदा खाने की चिन्ता में रहनेवाला व्यर्थ बात करनेवाला, विश्वासघाती, कुकर्मी और भीरु (डरने वाला) होता है ॥ ८२ ॥

अथ नवमभावगतशनिफलम्—

बख्तबुलन्दः श्रीमान् शीरींसखुनश्च मानवो यदि वै ।
जोह्लो बख्तमकाने वेतालश्च हि कृपालुरपि भवति ॥ ८३ ॥

यदि जन्मलग्न से नवम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य जीवन में सुख से रहनेवाला, धनवान्, सुन्दर स्वरूपवाला, मधुर वचन बोलनेवाला, सुखी और दया से युक्त होता है ॥ ८३ ॥

अथ दशमभावगतशनिफलम्—

शाहमकाने जोह्लच्चेपु दशाप्ते च मानवो शाहः ।
अथवा भवेन्मुशीरः खुशखुल्कः सुकृती गनी नेही ॥ ८४ ॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य राजा या राजमन्त्री, सदैव सुखी रहनेवाला, पुण्यकार्य में हमेशा दत्त-चित्त, मानी, यशस्वी और अधिक प्रेम करनेवाला होता है ॥८४॥

अथ एकादशभावगतशनिफलम्—

साहबदर्दो नेकः शीरींसखुनस्तवङ्गरो ना स्यात् ।
याप्तमकाने जोहल ईशः साबिरो रिपुहन्ता ॥ ८५ ॥

यदि जन्मलग्न से एकादश स्थान में शनि हो तो वह मनुष्य पञ्चायत करनेवाला, दयावान्, ईमानदार, मीठी बात करनेवाला,

रूपवान्, दुर्बल शरीरयुक्त, सन्तोषी, अधिकारी और शत्रुओं का नाश करने वाला होता है ।। ८५ ।।

अथ द्वादशभावगतशनिफलम्—

तङ्गहालो बदफेलः पापासक्तश्च मुफ्लिसो मनुजः ।
जोह्लः खर्चमकाने भवति हरीशः कृपालुरेव स्यात् ।। ८६ ।।

यदि जन्मलग्न से द्वादश भाव में शनि हो तो मनुष्य अधिक खर्च करने के कारण दुखी तथा व्यर्थ खर्च करनेवाला, कुकर्म में रत, बलवान् और दयालु होता है ।। ८६ ।।

इति खेटकौतुके तन्वादिभावस्थितशनिफलम् ।

अथ राहुफलम्

तत्र लग्नगतराहुफलम्—

अव्वलखाने यदा रासः खिस्मनाकश्च काहिलः ।
मनुजः स्वार्थकर्ता स्याद्भवेद् बेरोतु जाहिलः ।। ८७ ।।

यदि जन्मलग्न में राहु हो तो मनुष्य सर्वदा दुखी, आलसी, कुरूप, स्वार्थी, व्यर्थ वैर करनेवाला और मूर्ख होता है ।। ८७ ।।

अथ द्वितीयभावगतराहुफलम्—

कुजीबाहासिदरासो मालखाने च मुफ्लिसम् ।
करोति मनुजं वान्यदेशे धनसमन्वितम् ।। ८८ ।।

यदि जन्मलग्न से द्वितीय भाव में राहु हो तो वह मनुष्य अपने धर्म कर्म से विहीन, स्वेच्छा से दुःख सहनेवाला और अन्य देशों में जाकर धन कमाकर सुखी होता है ।। ८८ ।।

अथ तृतीयभावगतराहुफलम्—

पाकः शाहबलः स्याद्वै नेकनामी गनी सुखी ।
शीयुम्खाने यदा रासः प्रभवेन्मनुजो धनी ।। ८९ ।।

यदि जन्मलग्न से तृतीय भाव में राहु हो तो मनुष्य शुचि से रहनेवाला, राजबल से युक्त, बड़ा यशस्वी, प्रभावशाली, सुखी, धनी और दानी होता है ॥ ८९ ॥

अथ चतुर्थभावगतराहुफलम्—

रासश्चेद्दोस्तखाने स्यात् परेशानो मुसाफिरः ।
नादानोऽपि च वादी च सौख्यहीनो विपक्षकः ॥ ९० ॥

यदि जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में राहु हो तो वह मनुष्य परेशान होकर विदेश में भ्रमण करनेवाला, अज्ञानी (मूर्ख), व्यर्थ विवाद करनेवाला, सुख से हीन और मित्र से विमुख तथा शत्रु से पीड़ित रहता है ॥ ९० ॥

अथ पञ्चमभावगतराहुफलम्—

पिसर्खाने स्थितो रासः पुत्रसौख्यविवर्जितम् ।
बहोशं दर्दशिकमं नादानं कुरुते नरम् ॥ ९१ ॥

यदि जन्मलग्न से पंचमभाव में राहु हो तो मनुष्य पुत्र सुख से विहीन, परिवार से उदासीन, शरीर से पीड़ा युक्त और नालायक होता है ॥ ९१ ॥

अथ षष्ठभावगतराहुफलम्—

म्लेच्छावनीशाद्द्रव्याप्तिर्दिलं च साहबं नरम् ।
बद्खानास्थितो रासः करोति रिपुसंक्षयम् ॥ ९२ ॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठ स्थान में राहु हो तो वह मनुष्य म्लेच्छ (मुसलमान) जातीय राजा से धन का लाभ करनेवाला, पंचायत करनेवाला, दिल से उदार और शत्रुओं को नाश करनेवाला होता है ।९२।

अथ सप्तमभावगतराहुफलम्—

हिर्जगर्दश्च तालो गुस्वरो बद्जनो भवेत् ।
हफ्तमूखाने यदा रासः कलही मनुजस्तदा ॥ ९३ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम भाव में राहु हो तो वह मनुष्य पागल के समान व्यर्थ क्रोध करके घूमनेवाला, क्रोधी, बुरे स्वभाववाला, व्यर्थ लड़ाई तथा विवाद करनेवाला होता है ॥ ९३ ॥

अथ अष्टमभावगतराहुफलम्—

हस्तम्खाने यदा रासः शरीरी स्यान्मुसाफिरः।
वेदीनः खिश्मनाकः स्याद् बदकारश्चमुफ्लिशः ॥ ९४ ॥

यदि जन्मलग्न से अष्टम भाव में राहु हो तो वह मनुष्य शरीर से सुन्दर, विदेश में रहनेवाला, क्रोधी, अनुचित कार्य करनेवाला, व्यर्थ विवाद करनेवाला और धनहीन होता है ॥ ९४ ॥

अथ नवमभावगतराहुफलम्—

वख्तखाने यदा रासः प्रभवेन्मनुजस्तदा।
जवाहिर्जर्कशीयुक्तः साहबः सौख्यवान्नरः ॥ ९५ ॥

यदि जन्मलग्न से नवम भाव में राहु हो तो वह मनुष्य रत्नों से युक्त, जरीदार वस्त्रों का अधिकारी, बहुत नौकरों से युक्त और सुखी होता है ॥ ९५ ॥

अथ दशमभावगतराहुफलम्—

रासो बादशाहखाने भवेज्जोरावरो गनी।
विपक्षपक्षरहितो मूईशः पुर्तरुद्दतः ॥ ९६ ॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में राहु हो तो वह मनुष्य बहुत बलशाली, दूसरों का उपकार करनेवाला, शत्रु से रहित, धनवान् और चिन्ता युक्त होता है ॥ ९६ ॥

अथ एकादशभावगतराहुफलम्—

यापतखाने भवेद्रासो जायते नहि साहबः।
बेकारश्च कर्जमन्दः कलही मनुजस्तदा ॥ ९७ ॥

यदि जन्मलग्न से एकादश भाव में राहु हो तो मनुष्य विख्यात

और यशस्वी नहीं होता है, व्यर्थ कार्य में समय लगानेवाला, कर्ज लेनेवाला और बन्धुवर्गों से कलह करनेवाला होता है ॥ ९७ ॥

अथ द्वादशभावगतराहुफलम्—

रासः स्थितो यदा यस्य खर्चखाने भवेत्तदा ।
कलहप्रियबेकारः कर्जमन्दश्च मुपिलसः ॥ ९८ ॥

यदि जलमग्न से द्वादश भाव में राहु हो तो वह मनुष्य कलहप्रिय, व्यर्थ घूमकर समय नष्ट करनेवाला, कर्ज लेनेवाला धनहीन होता है ॥ ९८ ॥

इति खेटकौतुके तन्वादिभावगतराहुफलम् ॥

अथ केतुफलम्

सर्वभावगतकेतुफलम्—

यस्मिन्भावे फलं यद्धि राहोः प्रोक्तंशुभाऽशुभम् ।
तद्वदेव विजानीयात्तत्रैव शिखिनः फलम् ॥ ९९ ॥

इस खेटकौतुक नामक ग्रन्थ में राहु के सम्बन्ध से जिस भाव का जो फल कहा गया है, केतु का भी वैसा ही उस भाव का फल समझना चाहिए ॥ ९९ ॥ इति तन्वादिभावगतकेतुफलम् ।

इति खेटकौतुके ग्रहाणां द्वादशभावगतफलानि ।

अथ राजयोगाध्यायः

यदा माहताबो भवेन्मालखानं
मिरीखोऽथवा मुस्तरी बख्तखाने ।
अतारिद् विलग्ने भवेद्वख्शापूर्णो
भवेद्वानदारोऽथवा बादशाहः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा जन्मलग्न से द्वितीय भाव में और मंगल या बृहस्पति दशम भाव में हो तथा लग्न में बुध हो तो वह

मनुष्य बहुत बड़ा धनवान् या बादशाह होता है ॥ १ ॥

भवेदाफताबो यदा षष्ठखाने
पुनर्दैत्यपीरोऽथ केन्द्रे गुरुर्वा ।
सुजातः शुतर्फीलताज्याहयाढ्यो
जरीजर्जरावस्यदातश्चिरायुः ॥ २ ॥

यदि जन्मकाल में षष्ठभाव में सूर्य हो, शुक्र या बृहस्पति केन्द्र (१।४।७।१०) में हो तो वह मनुष्य अपने कुल में प्रसिद्ध, गुणी, हाथी, घोड़े आदि से युक्त, जरीदार कपड़े का प्रिय, लज्जावान्, धनवान् और दीर्घायु होता है ॥ २ ॥

यदा चस्मखोरा भवेद्दोस्तखाने
ततो मुस्तरी दोस्तखानेऽथ लग्ने ।
अतारिद्धनस्थो बृहत्साहिबो स्याद्
बृहत् सुमख्मलखजानासुपूर्णः ॥ ३ ॥

यदि चतुर्थ भाव में शुक्र या बृहस्पति हो और लग्न में बुध हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रतापी, उत्तमउत्तम वस्त्र, धन आदि से युक्त हो कर पूर्ण सुखी होता है ॥ ३ ॥

तृतीये भवेदाफताबस्य पुत्रो
यदा माहताबस्य पुत्रो विलग्ने ।
भवेन्मुस्तरी केन्द्रखाने नराणां
बृहत्साहिबी तस्य ताले रुजुः स्यात् ॥४॥

यदि लग्न से तृतीय स्थान में शनि, लग्न में बुध और बृहस्पति केन्द्र में हो तो वह मनुष्य बहुत प्रभावशाली, भाग्यवान्, राजा होता है ॥ ४ ॥

यदा मुस्तरी पञ्चखाने मिरीखो
यदा बख्तखाने रिपौ आफताबः ।

नरो वा अकूफो भवेत्कुञ्जरेशो
बृहद्रोशनो वाहिनीवारणाढ्यः ॥ ५ ॥

यदि जन्मलग्न से पंचम भाव में बृहस्पति, दशम भाव में मंगल और षष्ठ भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य बहुत बुद्धिमान्, हाथी, घोड़ा, सवारी से युक्त और बड़ा प्रतापी होता है ॥ ५ ॥

अतारिद् विलग्ने सुखे माहताबो
गुरुर्बख्तखाने तमो लाभखाने ।
जहानस्य खूबी भवेन्नेकबख्तः
खजाना मजाढ्यो मुलुक्साहिबोस्यात् ॥६॥

यदि जन्मकाल में लग्न में बुद्ध, तथा चतुर्थ भाव में चन्द्रमा, दशम भाव में बृहस्पति और एकादश भाव में राहु या केतु हो तो वह मनुष्य संसार भर में प्रसिद्ध पुण्य कार्य करनेवाला, पूर्णधनी और हाथी आदि सवारियों से युक्त राजा होता है ॥ ६ ॥

यदा देवपोरो भवेद् बख्तखाने
पुनर्दैत्यपीरोऽथवा स्वप्रखाने ।
अतारिद्विलग्ने तृतीये मिरीखः
शनिर्लाभखाने नरः काबिलः स्यात् ॥७॥

जिसके जन्मकाल में दशम भाव में बृहस्पति, नवम भाव में शुक्र और लग्न में बुध, तृतीय भाव में मंगल तथा एकादश में शनि हो तो वह मनुष्य हर एक विद्या में चतुर और विख्यात होता है ॥

हमल्माहताबो व्यये आफताबो
यदा मुस्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे ।
भवेन्मानवो देवतेजस्कराढ्यो
बृहत्साहिबी बख्तखूबी कमालः ॥ ८ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम स्थान में चन्द्रमा, द्वादश में सूर्य,

केन्द्र (१।४।७।१०) या त्रिकोण (९।५) में बृहस्पति हो तो वह मनुष्य बहुत प्रतापी, देवता की तरह तेजस्वी, समय का उपयोग करनेवाला और चमत्कार युक्त होता है ॥ ८ ॥

खजानागजाढ्यो भवेल्लश्कराढ्यो
जहानप्रियो मुस्तरी जायखाने ।
मिरीखोऽथ लाभे बुधः पञ्जखाने
शनिः शत्रुखाने नरः काबिलः स्यात् ॥९॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम भाव में बृहस्पति, एकादश में मंगल, पंचम भाव में बुध और षष्ठ भाव में शनि हो तो वह मनुष्य सेना, खजाना, सवारियों से युक्त, लोकप्रिय और बुद्धिमान होता है ॥

कमर् केन्द्रखाने शनिः शत्रुखाने
त्रिकोणेऽथवा मुश्तरी चश्मखोरा ।
स जातो नरः साबिरः सद्गुणज्ञो
भवेच्छायरो मालदारोऽथ खूबी ॥ १० ॥

यदि जन्मकाल में चन्द्रमा केन्द्र (१।४।७।१०) में शनि षष्ठ स्थान में, बृहस्पति या शुक्र त्रिकोण (९।५) में हो तो वह मनुष्य पूर्ण सन्तोषी, सद्गुणों को जाननेवाला, कवि, धनी और सुन्दर स्वरूप वाला होता है ॥ १० ॥

मिरीखोऽथवा खेशशम्तोलिखाने
गुरुर्मौतराशौ जया माहताबः ।
भवेज्जन्मकाले यदा चश्मखोरो
जुलीखप्रहर्ता जहानप्रचण्डः ॥ ११ ॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय स्थान में मंगल, अष्टम में बृहस्पति, सप्तम में चन्द्रमा और लग्न में शुक्र हो तो वह मनुष्य शत्रुओं को नाश करनेवाला और संसार में प्रबल प्रतापी होता है ॥ १ ॥

धनस्थे कुमुद्वन्धु षष्ठे रविः स्यात्
सखव्योम्नि विच्चेति विद्वान्कविश्च ।
बृहत्सावरी शालमखमल्बनातः
शुतुर्फीलफानूसतम्बूकनातः ॥१२॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय भाव में चन्द्रमा, षष्ठ भाव में सूर्य, चतुर्थ स्थान में बुध और दशम स्थान में शुक्र हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली, न्यायकर्त्ता, सन्तोषी, शास्त्र जाननेवाला, अच्छे-अच्छे वस्त्रों से युक्त और राजचिह्न से युक्त होता है ॥ १२ ॥

आयुखाने चश्मखोरा मालखाने च मुश्तरी ।
राहुजो पैदामकाने शाह होवे मुल्कका ॥ १३ ॥

यदि अष्टम भाव में शुक्र, द्वितीय भाव में बृहस्पति और जन्मलग्न में राहु हो तो वह मनुष्य चक्रवर्त्ती राजा होता है ॥ १३ ॥

यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने
यदा चश्मखोरा जमी वा समाने ।
तदा ज्योतिषी क्या लिखे क्या पढ़ेगा
हुआ बालका बादशाही करेगा ॥ १४ ॥

यदि जन्मकाल में बृहस्पति कर्क या धनु राशि में हो तथा शुक्रदशम या द्वितीय भाव में हो तो दैवज्ञजन ऐसे जातक के फलादेश के लिये परिश्रम न करें क्योंकि वह जातक निश्चय बादशाह होगा ॥ १४ ॥

यदा चश्मखोरा भवेल्लग्नखाने
तदा मुश्तरी बख्तखाने विलग्नात् ।
स जातः शुतुर्फीलजातीहयाढ्यो
जरोजर्जरी वक्तदाता चिरायुः ॥ १५ ॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में बृहस्पति और लग्न में शुक्र हो तो वह जातक चतुरंगिनी (हाथी, घोड़े, रथ और पैदल) सेनाओं से युक्त अच्छे-अच्छे वस्त्र धारण करनेवाला, धनी और दीर्घायु होता है ॥ १५ ॥

आफताबो मालखाने यस्य जन्मनि च ध्रुवम् ।
सकलरोजीमुश्किलं पड़ै फांके मुफ्लिसम् ॥ १६ ॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य सभी व्यापार से विमुख होकर बहुत कष्ट से जीवन बितानेवाला और बेकार होता है ॥ १६ ॥

यदा शत्रुखाने पड़ै उच्चका ।
करै खाक दौलत फिरै जाबजा ॥ १७ ॥

यदि सूर्य उच्च राशि का होकर षष्ठ स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी सारी सम्पत्तियों को स्वाहा करके भटकता फिरता है ॥ १७ ॥

आयुखाने चश्मखोरा मालखाने मुश्तरी ।
सबाबूखाने चन्द्रदीदम् बादशाहम्बर्बरी ॥ १८ ॥

यदि जन्म लग्न से अष्टम स्थान में शुक्र और द्वितीय भाव में बृहस्पति तथा नवम भाव में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य राजा का वजीर अर्थात् मन्त्री होता है ॥ १८ ॥

हमल् आफताबो वृषे माहताबो
यदा मुश्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे ।
भवेन्मानवो दौलतो लश्कराढ्यो
बृहत्साहिबी तस्य खूबी कमालः ॥ १९ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तम भाव में मेष का सूर्य, बृष का चन्द्रमा और केन्द्र (१।४।७।१०) या त्रिकोण (९।५) में बृहस्पति हो तो वह मनुष्य धनी, सेना से युक्त, प्रभावशाली, सुन्दर स्वरूपवाला, चमत्कारी और यशस्वी होता है ॥ १९ ॥

हमल् आफताबो वृषे माहताब—
स्त्रिकोणेऽपि वा मुश्तरी चश्मखोरा ।
नरो जायते राहरासन् गुणज्ञो
भवेच्छायरो मालदारोतिखूबी ॥२०॥

जिसके जन्मकाल में मेष का सूर्य सप्तम स्थान में, चन्द्रमा वृष राशि का और त्रिकोण (९।५) स्थान में बृहस्पति या शुक्र हो तो वह मनुष्य अनेक शास्त्रों के रहस्य को जाननेवाला, गुणवान्, कविता करनेवाला, धनवान् और अत्यन्त रूपवान् होता है ॥२०॥

यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने
झषे खेटपुत्रो वसेत् कारखाने ।
समं वीक्षते खूबखेटाः समस्ता
भवेन्मर्दवं दर्दयन्तुं दयालुः ॥ २१ ॥

यदि जन्मकाल में बृहस्पति कर्क या धनु राशि में हो और मीन राशि का शनि द्वितीय भाव में हो और सभी शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो वह मनुष्य बड़ा सामर्थ्यवान् और दयालु होता है ॥२१॥

यदा भाग्यमालिक भले घर पड़े
कमाकर सुदौलत् खजाने भरै ।
करेंगे जबख्शी अमीरी सुफल
वजीरी अमीरी करैं बेफिकर ॥ २२ ॥

यदि भाग्येश (नवमेश) उत्तम स्थान में अर्थात् अपने उच्च मूलत्रिकोण स्वराशि मित्रगृह इत्यादि शुभ स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी बुद्धि से धन कमाकर अपने खजाने को भरता है और आनन्दपूर्वक सुख से जीवन व्यतीत करता है ॥ २२॥

यदा चश्मखोरा भवेद् हफ्तखाने
शशी दोस्तखाने मिरीखोऽथ नक्रे ।
सुरत्कमालो नरो दीनदारो
गनीमप्रहन्ता जहानप्रचण्डः ॥ २३ ॥

यदि जन्मकाल में शुक्र सप्तम स्थान में चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में और मंगल मकर राशि में हो तो वह मनुष्य अत्यन्त सुन्दर

जमीऽजोथ नक्रे शनौ मौतखाने
गुरौ माहराशौ जरे माहताबः ।
भवेज्जन्मकाले नरो वा उदारो
गनीमप्रहन्ता जहानप्रचण्डः ॥ २४ ॥

यदि जन्मकाल में मंगल मकर राशि में, शनि अष्टम में, वृहस्पति कर्क राशि में होकर द्वितीय भाव में हो या चन्द्रमा वृहस्पति के सदृश हो तो वह मनुष्य उदार हृदयवाला, दयालु, शत्रुओं को नाश करनेवाला और संसार में प्रसिद्ध होता है ॥ २४ ॥

यदा मुश्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे
यदा वक्तखाने रिपौ आफताबः ।
अतारिद् विलग्ने नरो बख्तपूर्ण-
स्तदा दीनदारोऽथवा बादशाहः ॥ २५ ॥

यदि जन्मलग्न से वृहस्पति केन्द्र (१।४।७।१०) या त्रिकोण (९।५) में हो, सूर्य षष्ठ भाव में या दशम भाव में हो और बुध लग्न में हो तो वह मनुष्य समय को चरितार्थ करनेवाला, पूर्ण धनवान् दयालु और बादशाह होता है ॥ २५ ॥

इति वरौनीग्रामवास्तव्य श्रीवंशीधरशर्मात्मजज्यौतिषाचार्य-
ज्यौतिषतीर्थ-काव्यरत्नझोपाख्यश्रीदीनानाथशास्त्रि-
कृतभावबोधिनीभाषाटीका समाप्ता ।

———

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ।

— :०: —

महत्वपूर्ण प्रकाशन

अतिचारतत्त्वम् । पण्डित लषणलाल झा — ५-००

अहिबलचक्रम् । हिन्दी टीका सहित । डॉ० सत्येन्द्र मिश्र — ८-००

आर्य्यासप्ततिः । हिन्दी टीका सहित — ५-००

क्षयाधिमासतत्त्वम् । हिन्दी टीका सहित । पं० लषणलाल झा — ५-००

गौरीजातकम् । हिन्दी टीका सहित । टीकाकार— डॉ० सत्येन्द्र मिश्र — ८-००

ग्रहगोचरविचारः । 'प्रकाशिका' भाषा टीका सहित । सम्पादकोऽनुवादकश्च—देवीप्रसाद त्रिपाठी — १०-००

चमत्कारचिन्तामणिः । श्रीनारायणभट्टविरचितम् । 'भावबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेता । व्या०-पं० हीरालाल मिश्र — ८-००

तिथिचिन्तामणिः । गणेशदैवज्ञप्रणीतः । विजयलक्ष्मी भाषा टीका सहितः । पण्डित मातृकाप्रसाद पांडेय — १५-००

पद्मकोशः । दैवज्ञ भगवानदत्तविरचितः । 'बालबोधिनी' हिन्दी व्याख्या — ५-००

वृहत् अवकहडाचक्रम् । (ज्योतिषप्रवेशिका) हिन्दी भाषानुवाद सहित । व्या०–रामचन्द्र पांडेय — १०-००

बृहद्होडाचक्रविवरणम् । हिन्दी टीका सहित । टीकाकार- मुरलीधर ठक्कुर — १५-००

भावप्रकाशः । (ज्योतिष) । जीवनाथ झा प्रणीतः । श्रीपुष्पलाल झा कृत सरल सुबोध हिन्दी टीका सहित — ४०-००

प्राप्तिस्थानम्-कृष्णदास अकादमी पो०,बा० ११६८, वाराणसी-१